## ' श्रम्भं विभाग प्रदिश

## दिनांकं ६ अगस्त, 1985

संद्र्यो.वि./जॉ.जो.एन./168-84/33073.—चूंकि हरियाणा के राज्यवाल को राय है कि मै. प्रसोजन मेटल वर्जन (इण्डिना) प्रा. लि., गडगांच, के श्रमिकों तथा प्रबन्धका के मध्य ईसमें इसके बाद लिखिन मामले के सम्बन्ध में कोई बौद्योगिक विवाद है;

भौर अकि राज्यपाल, हरियाणा, इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतू निर्दिष्ट करना वाछनीय समझते हैं ;

इसलिए अब भौद्योगिक विवाद अिवित्यम, 1947. की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शिवतयों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा उक्त अधितियम की धारा 7-क के अधीन गठित, औद्योगिक अधिकरण. हरियाणा. फरीदाबाद को नीचे विनिर्दिष्ट भामले. जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिकों के बीच या तो विवादग्रस्त मामला/मामलें हैं, अध्या विवाद से मुगंगत या सम्बन्धित मामला/मामलें हैं, इंग्यंगितिय होतू निर्दिष्ट करते हैं-:

क्या संस्था के सभी कर्मचारी वर्ष 1983⊣84 का 20 प्रतिशत की दर से बोनस लेने के हकदार है ? यदि नहीं तो कितना किस बिवरण में बोनस सिलना चाहिए ?

> कुलवन्त सिह वित्तायक्त एवं सचिव, हरिष्णाः सरकार श्रम तथा रोजगार विभागः।

## दिनांक '26 ज़ुलाई, 1985

सं श्रा.वि./एफ.डी/103-85/31548 — चूकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. गुरैश गैस सिलिंग्डर्स प्रा. ति., फ्लाट स. 133 संस्टर 24, फराइ बाद, के श्रामिक श्री विदेश न य तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामलें में कोई भी बोगिक जिवबाद है;

श्रीर चृकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को त्यायनिर्णंग हैतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियन, 1947, की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हए. हरियाणा के राज्य शत इसके द्वारा सरकारी अधिक्षचना सं 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20, जून 1968, के साथ पड़ने हुए अधिन्दना सं 1495-जा-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरीं, 1958, द्वारा उपक अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीडाबाद, की विवाद प्रस्त या उससे सुमंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायालिय के लिए निर्देश्ट करते हैं, जो कि उनन प्रयन्धकों नथा। श्रमिक के बीच या तो विवाद प्रस्त मामला है या विवाद से मुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है :---

वया श्री विश्व न'थ की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का ृकदार है ?

सं श्री.वि./एफ.डी./103-85/31555 -- चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. गुरैरा गैस सिलेण्डर्स प्रा. लि., प्लाट नं. 183, सैक्टर 24, फरीदाबाद, के श्रीमिक श्री उदय शंकर तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इस के दाद लिखित मामने में कोई श्रीयोगिक विवाद है;

भीर चूकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को त्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इस लिए, प्रन, श्रीकोगिक विवाद प्रधिनियम, 1947:की धारा 10की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिवतयों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी प्रधिसूचना सं० 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968, के साथ पढ़ते हुए ग्रिविसूचना मं. 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त ग्रीधिनियम की वारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुमंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा ग्रामला म्यायनिर्णय के लिए निर्दिश्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुमंगत भावता सम्बन्धित मामला है :---

क्याः श्री उदय शंकर की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहन कर् , हकदार है ?